गायत्री मंत्र की विलक्षण शक्ति

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो
यो नः प्रचोदयात्

■ श्रीराम शर्मा आचार्य

गायत्री मंत्र की विलक्षण शक्तियाँ

गायत्री तत्त्वदर्शन

किसी वस्तु के संबंध में विचार करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी कोई मूर्ति हमारे मन:क्षेत्र में हो। बिना कोई प्रतिमूर्ति बनाए मन के लिए किसी भी विषय में सोचना असंभव है। मन की प्रक्रिया ही यही है कि पहले वह किसी वस्तु का आकार निर्धारित कर लेता है, तब उसके बारे में कल्पना शक्ति काम करती है। समुद्र भले ही किसी ने न देखा हो, पर जब समुद्र के बारे में कुछ सोच-विचार किया जाएगा, तब एक बड़े जलाशय की प्रतिमूर्ति मन:क्षेत्र में अवश्य रहेगी। भाषा-विज्ञान का यही आधार है। प्रत्येक शब्द के पीछे आकृति रहती है। 'कुत्ता' शब्द जानना तभी सार्थक है, जब 'कुत्ता' शब्द उच्चारण करते ही एक प्राणी विशेष की आकृति सामने आ जाए। न जानी हुई विदेशी भाषा को हमारे सामने कोई बोले तो उसके शब्द कान में पड़ते हैं, पर वे शब्द चिड़ियों के चहचहाने की तरह निरर्थक जान पड़ते हैं। कोई भाव मन में उदय नहीं होता। कारण यह है कि शब्द के पीछे रहने वाली आकृति का हमें पता नहीं होता। जब तक आकृति सामने न आए, तब तक मन के लिए असंभव है कि उस संबंध में कोई सोच-विचार करे।

ईश्वर या ईश्वरीय शक्तियों के बारे में भी यह बात है। चाहे उन्हें सूक्ष्म माना जाए या स्थूल, निराकार माना जाए या साकार। इन दार्शनिक और वैज्ञानिक झमेलों में पड़ने से मन को कोई प्रयोजन नहीं। उससे यदि इस दिशा में कोई सोच-विचार का काम लेना है, तो कोई आकृति बनाकर उसके सामने उपस्थित करनी पड़ेगी। अन्यथा वह ईश्वर या उसकी शक्ति के बारे में कुछ भी न सोच सकेगा। जो लोग ईश्वर को निराकार मानते हैं, वे भी 'निराकार' का कोई न कोई आकार बनाते हैं। आकाश जैसा निराकार, प्रकाश जैसा तेजोमय, अग्नि जैसा व्यापक, परमाणुओं जैसा अदृश्य, आखिर कोई न कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आकार उस निराकार का भी स्थापित करना ही होगा। जब तक आकार की स्थापना न होगी, मन, बुद्धि और चित्त से उसका कुछ भी संबंध स्थापित न हो सकेगा।

इस महासत्य को ध्यान में रखते हुए निराकार, अचिंत्य बुद्धि से अलभ्य, वाणी से अतीत, परमात्मा का मन से सबंध स्थापित करने के लिए भारतीय आचार्यों ने ईश्वर की आकृतियाँ स्थापित की हैं। इष्टदेवों के ध्यान की सुंदर, दिव्य प्रतिमाएँ गढ़ी हैं, उनके साथ दिव्य आयुध, दिव्य वाहन, दिव्य गुण, स्वभाव एवं शक्तियों का संबंध किया है। ऐसी आकृतियों का भक्तिपूर्वक ध्यान करने से साधक उनके साथ एकीभूत होता है, दूध और पानी की तरह साध्य और साधक का मिलन होता है। भृंगी, झींगुर को पकड़कर ले जाती है और उसके सामने भिनभिनाती है, झींगुर उस गुंजन को सुनता है और उसमें इतना तन्मय हो जाता है कि उसकी आकृति बदल जाती है और झींगुर भृंगी बन जाता है। दिव्य कर्म स्वभाव वाली देवाकृति का ध्यान करते रहने से साधक में भी उन्हीं दिव्य शक्तियों का आविर्भाव होता है। जैसे रेडियो यंत्र को माध्यम बनाकर सूक्ष्म आकाश में उड़ती फिरने वाली विविध ध्वनियों को सुना जा सकता है, उसी प्रकार ध्यान में देवमूर्ति की कल्पना करना आध्यात्मिक रेडियो स्थापित करना है, जिसके माध्यम से सूक्ष्मजगत में विचरण करने वाली विविध ईश्वरीय शक्तियों को साधक पकड़ सकता है। इसी सिद्धांत के अनुसार अनेक इष्टदेवों की अनेक आकृतियों का स्वतंत्र विज्ञान है। अमुक देवता की अमुक प्रकार की आकृति क्यों रखी गई है? इसका एक क्रमबद्ध रहस्य है। इसकी चर्चा तो एक स्वतंत्र पुस्तक में करेंगे, यहाँ तो इतना ही जान लेना पर्याप्त होगा कि अमुक प्रयोजन के लिए अमुक ईश्वरीय शक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए जो आकृति योगी लोगों को ठीक सिद्ध हुई है, वही आकृति उस देवता की घोषित कर दी गई है।

जहाँ अन्य प्रयोजनों के लिए देवाकृतियाँ हैं, वहाँ इस विश्व-ब्रह्मांड को ईश्वरमय देखने के लिए 'विराट रूप' परमेश्वर की प्रतिमूर्ति विनिर्मित की गई है। मनुष्य की सारी आत्मोन्नति और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुख-शांति इस बात पर निर्भर है कि उसका आंतरिक और बाह्य जीवन पवित्र एवं निष्पाप हो; समस्त प्रकार के क्लेश, दुःख, अभाव एवं विक्षोभों का कारण मनुष्य के शारीरिक और मानसिक पाप हैं। यदि वह इन पापों से बचता जाता है तो फिर और कोई कारण ऐसा नहीं जो उसकी ईश्वरप्रदत्त अनंत सुख-शांति में बाधा डाल सके। पापों से बचने के लिए ईश्वरीय भय की आवश्यकता होती है। ईश्वर सर्वत्र व्यापक है, इस बात को जानते तो सब हैं, पर अनुभव बहुत कम लोग करते हैं। जो मनुष्य यह अनुभव करेगा कि ईश्वर मेरे चारों ओर छाया है और वह पाप का दंड अवश्य देता है— जिसके यह भावना अनुभव में आने लगेगी, वह पाप न कर सकेगा। जिस चोर के चारों ओर सहस्र पुलिस घेरा डाले खड़ी हो और हर तरफ से उस पर आँखें गड़ी हुई हों, वह ऐसी दशा में भला किस प्रकार चोरी करने का साहस करेगा?

परमात्मा की आकृति चराचरमय ब्रह्मांड में देखना ऐसी साधना है, जिसके द्वारा परमात्मा के अनुभव करने की चेतना जाग्रत हो जाती है। यही विश्वमानव की पूजा है, इसे ही विराट दर्शन कहते हैं। रामायण में भगवान राम ने अपने जन्म-काल में कौशल्या को विराट रूप दिखलाया था। उत्तरकांड में काकभुशुंडि जी के संबंध में वर्णन है कि वे भगवान के मुख में चले गए तो वहाँ सारे ब्रह्मांड को देखा। भगवान कृष्ण ने भी इसी प्रकार कई बार विराट रूप दिखाए। मिट्टी खाने के अपराध से मुँह खुलवाते समय यशोदा को विराट रूप दिखाया, महाभारत के उद्योग पर्व में दुर्योधन ने भी ऐसा ही रूप देखा। अर्जुन को भगवान ने युद्ध के समय विराट रूप दिखाया, जिसका गीता के ११वें अध्याय में सविस्तार वर्णन किया गया है।

इस विराट रूप को देखना हर किसी के लिए संभव है। अखिल विश्व-ब्रह्मांड में परमात्मा की विशालकाय मूर्ति देखना और उसके अंतर्गत उसके अंग-प्रत्यंगों के रूप में समस्त पदार्थों को देखनें, प्रत्येक स्थान को ईश्वर से ओत-प्रोत देखने की भावना करने से भगवद् बुद्धि जाग्रत होती है और सर्वत्र प्रभु की सत्ता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्याप्त होने का सुदृढ़ विश्वास होने से मनुष्य पाप से छूट जाता है। फिर उससे पाप कर्म नहीं बन सकते। निष्पाप होना इतना बड़ा लाभ है कि उसके फलस्वरूप सब प्रकार के दुःखों से छुटकारा मिल जाता है। अंधकार के अभाव का नाम है—प्रकाश और दुःख के अभाव का नाम है—आनंद। विराट दर्शन के फलस्वरूप निष्पाप हुआ व्यक्ति सदा अक्षय आनंद का उपयोग करता है।

गायत्री मंत्र के परम सामर्थ्यवान २४ अक्षर

गायत्री महामंत्र में जिन २४ अक्षरों को प्रयोग किया गया है, उनमें मंत्रशास्त्र की, शब्द विज्ञान की रहस्यमय प्रक्रिया प्रयुक्त हुई है। अर्थ की अभिलाषा के लिए इनसे भी सरल और भावपूर्ण शब्दों का प्रयोग हो सकता है। ४ वेदों में लगभग ७० मंत्र ऐसे हैं, जो गायत्री मंत्र में दी गई शिक्षा और प्रेरणा को प्रस्तुत करते हैं, पर उनका महत्त्व गायत्री जैसा नहीं माना जाता। इस महामंत्र की गरिमा में उसमें प्रयुक्त हुए क्रम का असाधारण महत्त्व है।

सितार के तारों को अमुक क्रम से बजाने पर उनमें से अमुक राग की झंकृति निकलती है। यदि उँगली फिराने का क्रम बदल दिया जाए, तो दूसरी ध्वनि एवं रागिनी निकलने लगेगी। तारों पर हाथ रखने का क्रम दबाव एवं उतार-चढ़ाव का परिवर्तन उस एक ही सितार यंत्र में से अगणित प्रकार की राग-ध्वनियाँ प्रस्तुत करता है। ठीक उसी प्रकार शब्दों का उच्चारण जिस क्रम एवं शृंखला से किया जाता है, उसके अनुसार सूक्ष्म आकाश में, ईथर में विभिन्न प्रकार की ध्वनि-लहरियाँ प्रादुर्भूत होती हैं। इनका स्पर्श मानव-मस्तिष्क में अलग-अलग से प्रभाव उत्पन्न करता है।

शब्दों का सामान्य प्रभाव उनके अर्थों के आधार पर मस्तिष्क ग्रहण करता है, पर सूक्ष्म मस्तिष्क पर शब्दों के अर्थ का नहीं, उनके द्वारा उत्पन्न हुई स्पंदन स्फुरणाओं का प्रभाव पड़ता है। एक शब्द-शृंखला के वाक्य को यदि उलट-पुलट कर बोला जाए तो अर्थ में अंतर न आएगा। केवल व्याकरण संबंधी अशुद्धि मानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाएगी; किंतु इस सामान्य सी उलट-पुलट से सूक्ष्म आकाश में स्पंदन क्रम बहुत बदल जाएगा और उसके रहस्यमय प्रभाव में भारी अंतर रहेगा। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए वेदों के निर्माता ने इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखा है कि हर मंत्र में उसके अक्षर इस क्रम से सँजोए जाएँ, जिससे वह शक्ति प्रखर स्तर पर प्रादुर्भूत हो सके, जिसके लिए उसकी रचना की गई है। मंत्र विज्ञान का सारा ढाँचा इसी तथ्य पर खड़ा हुआ है।

अर्थ न जानने पर भी मंत्र अपना प्रभाव प्रस्तुत करते हैं। अधिकांश मंत्रों का अर्थ उनके प्रयोक्ता जानते भी नहीं और न उसकी आवश्यकता समझते हैं। अर्थ न जानने पर भी वे उतना ही प्रभाव प्रस्तुत करते हैं, जितना कि अर्थ जानने पर। अर्थ का प्रभाव, विचारणा, शिक्षा एवं भावना की दृष्टि से अवश्य है, पर जहाँ प्रकृति के सूक्ष्म अंतराल में स्पंदन प्रक्रिया का वैज्ञानिक संबंध है, वहाँ शब्द का ठीक ढंग से उच्चारण करना भी अभीष्ट प्रयोजन को पूरा कर देता है। यहाँ यह नहीं कहा जा रहा है कि गायत्री का या दूसरे मंत्रों का अर्थ नहीं जाना जाए। जानने से शिक्षणात्मक एवं बौद्धिक लाभ भी है, पर यदि अर्थ विदित न हो तो भी शब्द शक्ति अपना वैज्ञानिक प्रयोजन अपने ढंग से पूरा करती ही रहेगी, यहाँ इतना भर कहा जा रहा है। यही तथ्य है, जिसके आधार पर यज्ञ, अनुष्ठान एवं कर्मकांडों के अवसर पर प्रयुक्त हुए मंत्रों का अर्थ न जानने पर भी उस आयोजन में सम्मिलित नर-नारी लाभान्वित होते हैं। वेद-पारायण यज्ञों में कितने लोग सब मंत्रों का अर्थ समझते हैं ? अर्थ न जानने पर भी आयोजनों में सम्मिलित भरपूर लाभ उठाते हैं।

गायत्री महामंत्र में प्रयुक्त हुए २४ अक्षर जब उच्चारित किए जाते हैं, तो सर्वप्रथम मुख के विभिन्न अवयव, दंत, ओष्ठ, जिह्वा, कंठ, तालू आदि का परिचालन होता है। इन शब्दोच्चारण के मूल स्थलों की गतिविधियाँ शरीर में विभिन्न स्थानों पर अवस्थित शक्ति केंद्रों पर प्रभाव डालती हैं और उन्हें प्रसुप्त स्थिति से जागृति में परिणत कर देती हैं। यहाँ हमें यह जानना होगा कि इस देवालय शरीर के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विभिन्न भागों पर ऐसे शक्ति संस्थान बने हुए हैं, जिन्हें ऋद्धि-सिद्धियों का रत्न भंडार कहा जा सकता है। वे सामान्य व्यक्तियों के शरीरों में मूर्च्छित पड़े रहते हैं। इसलिए उनका जीवन पशु-पक्षियों एवं कीट-पतंगों जैसा—आहार, निद्रा, भय, मैथुन की जीवन प्रवृत्तियों तक सीमित रह जाता है, किंतु यदि कहीं उन मूर्च्छित शक्ति-स्रोतों को किसी प्रकार जगाया जा सके, तो सामान्य सा दीखने वाला शरीर भी देखते-देखते महापुरुष, सिद्धपुरुष एवं देवभूमिका में विचरण करने वाला बन सकता है। गायत्री मंत्र में प्रयुक्त अक्षरों का उच्चारण इन शक्ति-कोशों को प्रभावित करता है और उसकी प्रसुप्त क्षमता को जाग्रत करके आत्मबल की संपन्नता से लाभान्वित करता है।

षट्चक्रों का नाम अध्यात्म विद्या के प्रेमियों ने सुना होगा। मेरुदंड के आदि से लेकर अंतिम सिरे तक पहुँचते-पहुँचते छह स्थानों पर छह शक्ति संस्थान पाए जाते हैं। इसमें ऐसी विद्युत धाराओं का तारतम्य है, जो निखिल आकाश में व्याप्त प्रचंड शक्तियों के साथ अपना संबंध बनाए रखती हैं। ये षट्चक्र-शक्ति संस्थान जब जाग्रत होते हैं, तो उनकी सक्रियता बढ़ जाती है और वह बढ़ी हुई सक्रियता प्रकृति-प्रवाह में से अपने काम की धाराओं को पकड़कर अभीष्ट प्रयोजन के लिए अपने समीप खींच लेती है। जिस प्रकार अजगर अपने नेत्रों की विद्युत धारा से छोटे-मोटे जीवों को अपनी ओर खींचता है और वे बेचारे अनायास ही घिसटते हुए उसके मुख में चले जाते हैं, उसी प्रकार षट्चक्रों के जाग्रत शक्ति संस्थान निखिल ब्रह्मांड में संव्याप्त एक से एक बढ़ी-चढ़ी विभूतियों को अपनी ओर आकर्षित करके उनके अधिपति बन जाते हैं। सिद्धपुरुषों में ऐसी कितनी ही विशेषताएँ, विभूतियाँ पाई जाती हैं, जिनसे वे सामान्य व्यक्तियों के स्तर की तुलना में कहीं अधिक सामर्थ्यवान एवं सुविकसित सिद्ध होते हैं। अष्टसिद्धि, नवनिधि का वर्णन योग शास्त्रों में मिलता है। साधना मार्ग पर चलने वाले कितने ही व्यक्तियों में कुछ अलौकिक विशेषताएँ देखी जाती हैं, उनका वैज्ञानिक आधार यही है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधना द्वारा उस साधक ने अपने शरीर में सन्निहित शक्ति संस्थानों को जगाया और उनसे ब्रह्मांडव्यापी विभूतियों के आदान-प्रदान का संबंध जोड़ लिया।

षट्चक्र प्रख्यात हैं। उनके अतिरिक्त २४ विशिष्ट और ८४ सामान्य शक्तिकेंद्र भी इस शरीर में विद्यमान हैं। इन्हें उपत्यिकाएँ और विभेदिकाएँ कहते हैं। २४ उपत्यिकाएँ छोटे-छोटे षट्चक्रों जैसे शक्ति संस्थान ही हैं। ये शरीर के विभिन्न स्थानों पर विद्यमान हैं। गायत्री महामंत्र में २४ अक्षर जब स्पंदित होते हैं, तब मुख में उत्पन्न हुई गतिविधियों का सूक्ष्म प्रभाव उन उपत्यिकाओं पर पड़ता है और वे स्वसंचालित हलचल बनकर उन्हें प्रसुप्त स्थिति से जाग्रत स्थिति में परिणत करने का कार्य आरंभ कर देती हैं। अधिक जप करने की निरंतर चल रही प्रक्रिया पत्थर पर घिसने वाली रस्सी की तरह प्रभाव डालती रहती है और वे संस्थान जैसे-जैसे अपनी मूर्च्छा दूर करके चेतन भूमिका में आते-जाते हैं, वैसे-वैसे इस उपासना में संलग्न साधक अपने आप को अलौकिक शक्तियों से सुसंपन्न अनुभव करता हुआ आत्मविकास की ओर बढ़ता चला जाता है।

शरीर के किस स्थान पर कौन ग्रंथि उपत्यिका उपस्थित है और गायत्री मंत्र का कौन सा अक्षर उसे प्रभावित करने का प्रयोजन पूर्ण करता है, इसका सचित्र दिग्दर्शन गायत्री महाविज्ञान प्रथम भाग पृष्ठ २२-२३ पर दिया गया है। जिस प्रकार टाइपराइटर की कुंजियों पर उँगली दबाने से उसकी जुड़ी हुई तीली उठती है और कागज पर टकराकर अपना अक्षर छाप देती है, उसी प्रकार मुख से स्पंदित हुए गायत्री मंत्र के २४ अक्षर एक-एक उपत्यिका पर प्रभाव डालते हैं और वे वैज्ञानिक व्यवस्था के आधार पर सूक्ष्म होने लग जाते हैं।

आधुनिक चिकित्साशास्त्रियों ने नवीनतम शोधों के आधार पर मानव शरीर में अवस्थित कुछ विलक्षण ग्रंथियों की खोज की है। ये छोटी-छोटी गाँठें शरीर के विभिन्न स्थानों पर पड़ी हुई निरर्थक जैसी दीखती हैं। उनमें पसीना जैसा एक रस स्रवित होता रहता है, उसे 'हारमोन' कहते हैं। यह हारमोन जब रक्त में मिलते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, तो विभिन्न प्रकार की विलक्षणताएँ पैदा करते हैं। सामान्यतया सभी शरीर हाड़-मांस की दृष्टि से लगभग एक ही तरह के हैं। जीवनयापन और आहार-विहार के तौर-तरीकों में थोड़ा-बहुत ही अंतर होता है। फिर एक से दूसरे में जो जमीन-आसमान जैसा अंतर पाया जाता है उसका क्या कारण है? इस प्रश्न का उत्तर शरीरशास्त्री उन हारमोनों की विचित्रता और विलक्षणता बताते हैं। उनका कहना है कि अवयव एवं आहार-विहार का क्रम भले ही य एकसा हो, मनुष्यों में यह सूक्ष्म ग्रंथियाँ असामान्य स्तर की होती हैं और उनसे स्रवित होने वाले हार्मोन, न्यूनाधिक होने के कारण मनुष्यों में विलक्षणता पैदा करते हैं। शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक एवं आत्मिक विशेषताओं का उत्तरदायित्व वे इन हार्मोन ग्रंथियों पर आरोपित करते हैं और साथ ही यह भी कहते हैं कि इन शक्ति संस्थानों पर औषधि या शल्यक्रिया कोई काम नहीं करती। इनकी गतिविधियों को घटाना-बढ़ाना यदि किसी माध्यम से संभव हो सकता है, तो उसमें मानवीय विद्युत विज्ञान के विद्वान ही सफल हो सकते हैं, शरीरशास्त्री नहीं।

मानवीय विद्युत विज्ञान ही वस्तुतः योग साधना का प्रमुख प्रयोजन है। हाड़-मांस नहीं, मानवीय व्यक्तित्व एवं वर्चस्व का आधार उसमें प्रवाहित विद्युत धाराएँ ही होती हैं। मेरुदंड में प्रवाहित होने वाला इड़ा और पिंगला का परिचय साधारण से साधारण साधक को भी होता है। ये दोनों निगेटिव और पोजीटिव—ऋण और धन विद्युत धाराएँ हैं। इनके मिलने से चेतना-सुषुम्ना पैदा होती है। इन तीनों में समुचित साधन करके शरीर के दो ध्रुवों को—मूलाधार और सहस्र कमल को सचेतन बनाया जा सकता है। सुषुप्तावस्था में पड़ी हुई जीवनशक्ति-कुंडलिनी को जगाने के बाद कोई साधक सूक्ष्म प्रकृति के साथ अपना इतना अधिक संपर्क बना सकता है कि उसे इच्छानुसार दिशा में मनचाहे ढंग से मोड़ सके।

जिस प्रकार चेतन परमात्मा की इच्छा से प्रभावित होकर विश्व की विधि-व्यवस्था, सूक्ष्म प्रकृति, मोड़-तोड़ लेती रहती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, उसी प्रकार आत्मबल से सुसंपन्न आत्मा भी अपनी चेतन सत्ता का प्रभाव प्रकृति के अंतराल में फैला सकती है और सूक्ष्म वातावरण को मनमानी दिशा में मोड़ सकती है। इस सामर्थ्य का नाम सिद्धावस्था है। सिद्धपुरुषों में जो अगणित अलौकिकताएँ पाई जाती हैं और उनके द्वारा असंभव कार्य करके दिखाए जाते हैं, इसका कारण यही है कि उनने अपनी अंतश्चेतना को इतना बलवान बना लिया होता है कि प्रकृति की धाराओं को वे मनचाही दिशा में मोड़ सकें। सामान्य मनुष्य प्रकृति की व्यवस्था से अनुबंधित रहते हैं। उन्हें उधर ही चलना पड़ता है जिधर प्रकृति की विधि-व्यवस्था चलाती है; किंतु सिद्धपुरुष प्रकृति की धारा को अपनी भावना के अनुरूप मुड़ने को विवश कर सकते हैं। वे समय, युग, परिस्थिति, विधान और व्यवस्था को बदल सकते हैं—ऐसे प्रमाण योग विज्ञान के पन्ने-पन्ने पर अंकित हैं। आज भी वैसे उदाहरण शोधकर्त्ताओं को मिल सकते हैं।

यह आत्मिक समर्थता, अलौकिकता किसी को उपहार में नहीं मिलती, वरन प्रबल पुरुषार्थ द्वारा अपने भीतर उत्पन्न करनी पड़ती है। इसी उपार्जन-उत्पादन का नाम साधना अथवा तपश्चर्या है। यह अंधविश्वास नहीं, वरन एक विशुद्ध विज्ञान है जिसकी सत्यता प्रयोग-परीक्षण की कसौटी पर कसी जा सकती है। गायत्री उपासना इस मार्ग पर चलने की ही एक पूर्ण सुव्यवस्थित एवं पग-पग पर परीक्षित क्रियापद्धति है। उसका वास्तविक शुभारंभ २४ अक्षरों को बार-बार दुहराने से, जप करने से ही होता है। क्रमबद्ध रूप से बार-बार किसी शब्द गुच्छक मंत्र का उच्चारण पुनरावृत्ति करते रहने से एक विशिष्ट प्रकार का वर्तुल बन जाता है और उस आधार पर एक स्वसंचालित शक्ति-प्रवाह प्रादुर्भूत होने लगता है। यह वर्तुल प्रवाह बाह्य जगत में अभीष्ट स्तर की हलचल पैदा करता है और शरीर के भीतर की प्रसुप्त उपत्यिकाओं को एक ऐसी क्रमबद्ध प्रक्रिया के साथ शनैःशनैः सजग करने लगता है, जिसमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोई अवांछनीय गड़बड़ी उत्पन्न न हो। तांत्रिक उपासनाएँ तीव्र और तीक्ष्ण होती हैं। उनसे शक्तिकेंद्रों के जागरण में शीघ्रता तो होती है, पर साथ ही यह खतरा बना रहता है कि द्रुतगामी हलचल आत्मिक क्षेत्र में गड़बड़ी पैदा न कर दे और साधक को किसी अप्रत्याशित जोखिम का सामना करना पड़े। दक्षिणमार्गी उपासनाओं में सफलता कुछ देर से मिलती है, पर किसी प्रकार का खतरा प्रस्तुत होने की आशंका नहीं रहती। जप ऐसा ही प्रारंभिक प्रयोग है। उसका सहारा लेकर आत्मशक्ति के अक्षय भंडार से पूर्ण उपत्यिकाओं को शांति एवं सुव्यवस्था के साथ जगाया जा सकता है। जप के द्वारा जो शक्ति की वर्तुल प्रवाह धारा प्रादुर्भूत होती है, वह अपना काम करती रहती है और समयानुसार उसका आशाजनक प्रतिफल उत्पन्न होता है।

आकाश में आजकल जो राकेट, उपग्रह फेंके जा रहे हैं, पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के दायरे से बाहर निकलने पर सीधे आगे की दिशा में ऊपर की ओर नहीं चले जाते, वरन प्रकृति व्यवस्था के अनुरूप परिक्रमा करने जैसी कक्षा में घूमने लगते हैं। पृथ्वी की एक नियत मार्ग से परिक्रमा करके उस स्थान पर वापस आ जाते हैं, जहाँ से चले थे। फिर इसी अपनाए हुए मार्ग पर चलते और गोलाई में घूमकर वापस आते रहते हैं। कोई विशेष कारण न हो तो उनकी यही क्रियापद्धति तब तक चलती रहती है; जब तक इनका अस्तित्व रहता है। यही क्रियापद्धति समस्त ग्रहों-उपग्रहों की है, वे अपनी एक नियत निर्धारित कक्षा में घूमते हुए एक गति वर्तुल बनाते रहते हैं। शब्द का क्रम भी यही है। वह मुख से निकलकर निखिल आकाश में भ्रमण करने निकल जाता है और एक विस्तृत कक्षा में भ्रमण करता हुआ अपने उद्‌गम स्थान पर लौट आता है। फिर आगे बढ़ना, उसी कक्षा में घूमना और फिर उद्‌गम स्थान पर वापस आना। उस शब्द-राकेट का क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक उच्चारण करने वाले का अस्तित्व मौजूद है। गायत्री जप में उच्चारित किए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गए शब्द निखिल आकाश में वर्तुल प्रवाह उत्पन्न करते हुए अपनी कक्षा में भ्रमण करते हैं और जिस कामना के साथ वे उद्‌भूत हुए थे, उसके अनुरूप प्रकृति के अंतराल में अभीष्ट वातावरण बनाते हैं। फलतः वांछाएँ पूर्ण होने की संभावनाओं का सृजन होने लगता है। उपासना से कामना पूर्ति का प्रयोजन इसी प्रकार पूर्ण होता है।

गायत्री जप द्वारा उत्पन्न हुआ शक्तिशाली वर्तुल-प्रवाह केवल निखिल ब्रह्मांड में परिभ्रमण नहीं करता, वरन पिंड में—शरीर के भीतर भी ऐसी ही हलचल उत्पन्न होती है। महामंत्र के २४ अक्षर शरीर के भीतर भी एक परिभ्रमण बनाते हैं और २४ उपत्यिकाओं को बार-बार स्पर्श करके उनमें हलका-हलका गुदगुदी जैसा स्पंदन करते हैं। आंतरिक जागृति का यह सुकोमल क्रिया-कलाप स्वसंचालित रीति-नीति से गतिशील रहता है और कालांतर में साधक को असाधारण आत्मशक्ति से संपन्न कर देता है। दूसरे साधारण ढंग के व्यक्ति जब अपनी आंतरिक प्रसुप्त अवस्था के साथ उस सजग, आत्मबल वाले साधक से तुलना करते हैं, तो सब यही कहते हैं कि उसमें असाधारण अलौकिकता आ गई, यह व्यक्ति वह कार्य कर सकता है, जो हम नहीं कर सकते। यह अंतर अनायास ही उत्पन्न नहीं हो जाता, इसके लिए व्यवस्थित रीति से गायत्री महामंत्र की साधना करनी होती है। कहना न होगा कि साधना का प्रथम साधन, 'जाप' ही है। किसी भी मंत्र की शक्ति का लाभ लेना हो, तो उसका 'जाप' करना अनिवार्य है। बार-बार दुहराए हुए शब्द अंतःप्रदेश में एक गुंजन प्रतिध्वनि का रूप धारण करके हर छोटे-बड़े शक्ति संस्थान में व्याप्त हो जाते हैं। फलतः उस शरीर एवं अंतःकरण की प्रकृति प्रयुक्त मंत्र की सामर्थ्य के अनुरूप ढल जाती है। दीर्घकालीन सतत साधना वाला साधक एक प्रकार से मंत्र मूर्ति ही हो जाता है, उसके व्यक्तित्व में से मंत्र की सामर्थ्य झलकने लगती है। वही सिद्धि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। विनियोग में विश्वामित्र गायत्री के ऋषि कहे जाते हैं, जिन्होंने गायत्री को आत्मसात किया था, वे गायत्री स्वरूप बन गए थे। उनने उस महातत्त्व का साक्षात्कार किया था, अपने व्यक्तित्व को इस योग्य बनाया था कि इस महामंत्र का अवतरण उसमें हो सके।

गायत्री के २४ अक्षरों में सन्निहित शिक्षा सर्वविदित है— वरेण्य, भर्ग, देव गुण वाले सविता को आत्मा में धारण करने और सन्मार्ग पर प्रज्ञा को नियोजित करने का संदेश, एक स्पंदन इन शब्दों में प्रतिध्वनित होता है। इस मंत्र नीति को अपनाने की शिक्षा इस महामंत्र में दी गई है। पर यह नहीं समझ लेना चाहिए कि इतना उपदेश देना मात्र ही उसका प्रयोजन है। यह २४ अक्षर जिस प्रकार गुँथे हुए हैं, उनकी वास्तविक विशेषता उनके द्वारा उत्पन्न होने वाले वैज्ञानिक प्रयोजनों में है। यदि ऐसा न होता तो एक बार में पढ़-समझ लेना पर्याप्त होता। बार-बार उसका जप उच्चारण करने की कोई आवश्यकता न पड़ती। महामंत्र में सन्निहित अलौकिक एवं विलक्षण शक्तियों के बारे में शास्त्रकारों ने, तत्त्वदर्शी महर्षियों ने बार-बार संकेत किया है और बताया है कि इन अक्षरों के, इन शब्दों के लिखने-बोलने से जो साधारण स्वरूप परिलक्षित होता है, उतना ही न समझा जाए। इन अक्षरों में रहस्य भी बहुत कुछ है। उस रहस्य में अलौकिकता भी प्रचुर परिमाण में छिपी पड़ी है।

गायत्री मंत्र यों याद तो कई व्यक्तियों को होता है, उसका अर्थ भी वेदव्यास ने महाभारत में यही प्रतिपादित किया है कि गायत्री तत्त्व एवं रहस्य जानना चाहिए। जानकर उसे अपनाना चाहिए, जो इस प्रकार प्रयत्न करेंगे, वे सर्वांगीण प्रगति की दिशा में ही निरंतर अग्रसर होंगे। अवनति का कोई ऐसा प्रसंग उनके सामने न आएगा।

य एतां वेद गायत्रीं पुण्यां सर्वगुणान्विताम्।
तत्वेन भारतश्रेष्ठ ! स लोके न प्रणश्यति॥

—महाभारत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''जो इस पवित्र सर्वगुणसंपन्न गायत्री तत्त्व को जानता है उसकी इस लोक में अवनति नहीं होती ''

गायत्री महामंत्र के अक्षरों को जानते, समझते हुए भी हम वस्तुतः उससे अनजान ही हैं। यदि उसे हम तत्त्वतः जानने, समझने और अपनाने में सफल हुए होते तो उस स्थिति में न होते जिसमें आज हैं, तब हमारी स्थिति कुछ और ही होती। हम ब्रह्मचेतन, पुण्यात्मा, कीर्तिमान, दिव्य विभूतियों से सुसंपन्न, निर्मल अंतःकरण और परम श्रेय के अधिकारी बने हुए सुख-शांतिपूर्ण स्वर्गीय जीवन जी रहे होते। गायत्री उपनिषद का प्रतिपादन है कि—

यो हवा एवं वित् स ब्रह्मवित्पुण्यां च कीर्तिं लभते सुरभींश्च सुगन्धान् सोऽपहतपाप्मानन्तां श्रियमश्नुते य एवं वेद यश्चैवं विद्वानेवमेतां वेदानां मातरं सावित्रीसम्पद उपनिषदमुपास्त इति ब्राह्मणम्।

—गायत्री उपनिषद

जो वेदमाता गायत्री को ठीक तरह जान लेता है, वह ब्रह्मवत् पुण्य, कीर्ति एवं दिव्य विभूतियों को प्राप्त करता है और निर्मल अंतःकरण होकर परम श्रेय का अधिकारी बनता है।

गोपथ ब्राह्मण में गायत्री के २४ अक्षरों को २४ स्तंभों का दिव्य तेज बताया गया है। समुद्र में जहाजों का मार्गदर्शन करने के लिए जहाँ-तहाँ प्रकाश स्तंभ खड़े रहते हैं। उनमें जलने वाले प्रकाश को देखकर नाविक अपने जलपोत को सही रास्ते से ले जाते हैं और चट्टानों से टकराने एवं कीचड़ आदि में धँसने से बच जाते हैं। इसी प्रकार गायत्री के २४ अक्षर २४ प्रकाश स्तंभ बनकर प्रज्ञा की जीवन नौका को प्रगति एवं समृद्धि के मार्ग पर ठीक तरह चलते रहने की प्रेरणा देते हैं, आपत्तियों से बचाते हैं और अनिश्चितता को दूर करते हैं।

गोपथ के अनुसार गायत्री चारों वेदों की प्राण, सार, रहस्य एवं तन (साम) है। साम संगीत का यह 'रथन्तर' आत्मा के उल्लास को उद्वेलित करता है। जो इस तेज को अपने में धारण करता है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसकी वंश परंपरा तेजस्वी बनती चली जाती है। उसकी पारिवारिक संतति और अनुयायियों की शृंखला में एक से एक बढ़कर तेजस्वी, प्रतिभाशाली उत्पन्न होते चले जाते हैं। श्रुति कहती है—

तेजो वै गायत्री छन्दसां रथन्तरं साम्नाम् तेजश्चतुर्विंशस्ते माना तेज एवं तत्सम्यक् दधाति पुत्रस्य पुत्रस्तेजस्वी भवति।

—गोपथ

"गायत्री सब वेदों का तेज है। सामवेद का यह रथंतर छंद ही २४ स्तंभों का यह दिव्य तेज है। इस तेज को धारण करने वाले की वंश परंपरा तेजस्वी होती है।

गायत्री को परा विद्या कहा है। साधारण विद्या के लाभों का परिचय सर्वसाधारण को है; किंतु परा विद्या का महत्त्व कोई विरले ही जानते हैं। जो जानते हैं, वे धन्य हो जाते हैं। परमतत्त्व में परमात्मा से दिव्य विभूतियों से—जीव का सीधा संबंध बनाने वाली परा विद्या मनुष्य की सबसे बड़ी श्रेय साधना है। गायत्री के २४ अक्षरों में बीजरूप से गायत्री विद्या का सारा रहस्य और तत्त्वज्ञान ओत-प्रोत हो रहा है। शास्त्रकारों ने इस रहस्य को जाना और प्रकट किया है—

गायत्री त्रिपदा देवी त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी।
चतुर्विंशाक्षरा विद्या सा चैवाभीष्ट देवता॥

—रुद्रयामल

"तीन पद वाली तथा तीन अक्षर (अ-उ-म्) वाली, समस्त भुवनों की अधिष्ठात्री २४ अक्षरों वाली परा विद्यारूपी गायत्री देवी सबको इच्छित फल देने वाली है।"

रुद्रयामल तंत्र की भाँति ही गायत्री तंत्र में भी इसी तथ्य का वर्णन है। उसका प्रत्येक अक्षर इस महाविज्ञान का सारगर्भित अध्याय ही कहा जाना चाहिए।

चतुर्विंशाक्षरी विद्या पर तत्त्व विनिर्मिता।
तत्कारात् यात्कारपर्यंतं शब्द ब्रह्मस्वरूपिणी॥

—गायत्री तंत्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"तत से लेकर प्रचोदयात के २४ अक्षरों वाली गायत्री तत्त्व अर्थात परा विद्या से ओत-प्रोत हो।"

गायत्री के २४ अक्षर आठ-आठ शब्दों के तीन पादों में विभाजित इन तीन पादों का अपना महत्त्व है। तीन पाद तीनों लोकों की समस्त विभूतियाँ अपने अंदर धारण किए हुए हैं। जो उन्हें ठीक तरह जान-समझ लेता है, उन्हें प्रयोग में लाने की प्रक्रिया समझ लेता है, वह त्रयलोक विजयी की तरह आनंदित होता है।

"भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टावक्षराण्यष्टा क्षर ७ हवा एकं गायत्र्यै पदमेतदुहैवास्या एतत्सयावदेषु त्रिषु लोकेषु तावद्ध जयति योऽस्याएतदेवं पदं वेद।" —बृहदारण्यक ५.१४.१

अर्थात भूमि, अंतरिक्ष, द्यौ ये तीनों गायत्री के प्रथम पाद के आठ अक्षरों के बराबर हैं। जो गायत्री के इस प्रथम पाद को जान लेता है, सो तीनों लोकों को जीत लेता है।

बृहदारण्यक उपनिषद में गायत्री के तीन चरण के द्वारा उपलब्ध हो सकने वाले प्रतिफलों का उल्लेख मिलता है। जिससे जाना जाता है कि इस महामंत्र का आश्रय लेने वाला साधक क्या कुछ प्राप्त करने में सफल हो सकता है।

तत्सवितुर्वरेण्यं मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। भूः स्वाहा भर्गो देवस्य धीमहि। मधुनक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिवरु रजः। मधु द्यौ रस्तु नः पिता। भुवः स्वाहा धियो यो नः प्रचोदयात्। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधु मां ३ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः स्वः स्वाहा। सर्वांश्च मधुमती रहमेवेद ७ सर्वं भूयासं भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

—बृहदारण्यक

—(**तत्सवितुर्वरेण्यं**) मधुर वायु चले, नदी और समुद्र रसमय होकर रहें। औषधियाँ हमारे लिए सुखकारक हों।

—(**भर्गो देवस्य धीमहि**) रात्रि और दिन हमारे लिए सुखकारक हों। पृथ्वी की रज हमारे लिए मंगलमय हो। द्युलोक हमें सुख प्रदान करे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

—(**धियो यो नः प्रचोदयात्**) वनस्पतियाँ हमारे लिए रसमयी हों। सूर्य हमारे लिए सुखप्रद हो, उसकी रश्मियाँ हमारे लिए कल्याणकारी हों। सब हमारे लिए सुखप्रद हों। मैं सबके लिए मधुर बन जाऊँ।

यों उपरोक्त मंत्र में प्रार्थना जैसी शब्दावली का प्रयोग हुआ है, पर उसमें जिस भावना का संकेत है, उसे सहज समझा जा सकता है। प्रथम पाद में वायु, नदी, समुद्र, रस और औषधियों की, दूसरे पाद में दिन, रात्रि, पृथ्वी, समृद्धि एवं द्युलोक की और तीसरे पाद में धन-धान्य एवं ऋतुओं के अनुकूल होकर सुख-वैभव प्रदान करने की चर्चा है और साधक को इतना मधुर, सुसंस्कृत बन सकने का संदेश है, जिससे उसके लिए सब कोई अनुकूल एवं मधुर बन सके।

गायत्री मंत्र का एक-एक अक्षर एक-एक देवता का प्रतिनिधित्व करता है। इन २४ अक्षरों की शब्द-शृंखला में बँधे हुए २४ देवता माने गए हैं—

गायत्र्या वर्णमेकैकं साक्षात् देवरूपकम्।
तस्मात् उच्चारणं तस्य त्राणयेव भविष्यति॥

—गायत्री संहिता

अर्थात गायत्री का एक-एक अक्षर साक्षात देवस्वरूप है। इसलिए उसके उच्चारण से उपासक का कल्याण ही होता है।

देवता शक्ति के केंद्र हैं। ब्रह्मांड में व्याप्त विशिष्ट शक्तियाँ देव कहलाती हैं। यों ऐसे ३३ कोटि (श्रेणियाँ) के देवता हैं। उनका वर्गीकरण ३३ विभागों में किया जाता है। पर इनमें २४ ऐसे हैं, जो मानव प्राणी की भौतिक एवं आत्मिक प्रगति के लिए अत्यंत सहयोगी एवं उपयोगी हैं। गायत्री के २४ अक्षरों में से प्रत्येक का इन २४ देवताओं से क्रमशः संबंध है। गायत्री मंत्र में इन २४ देवताओं के नाम गिनाए हैं, जो गायत्री के अक्षरों के साथ संबंधित रहकर उपासक की अंतश्चेतना में अवतरित होते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दैवतानि शृणु प्राज्ञ तेषामेवानुपूर्वशः।
आग्नेयं प्रथमं प्रोक्तं प्राजापत्यं द्वितीयकम्॥
तृतीयं च तथा सौम्यमीशानं च चतुर्थकम्।
सावित्रं पञ्चमं प्रोक्तं षष्ठमादित्यदैवतम्॥
बार्हस्पत्यं सप्तमं तु मैत्रावरुणमष्टकम्॥
नवमं भगदैवत्यं दशमं चार्यमीश्वरम्।
गणेशमेकादशकं त्वाष्ट्रं द्वादशकं स्मृतम्।
पौष्णं त्रयोदशं प्रोक्तमैन्द्राग्नं च चतुर्दशम्॥
वायव्यं पंचदशकं वामदेव्यं च षोडशम्।
मैत्रावरुणि दैवत्यं प्रोक्तं सप्तदशाक्षरम्॥
अष्टादशं वैश्वदेवमूनविंशं तु मातृकम्।
वैष्णवं विंशतितमं वसुदैवमीरितम्॥
एकविंशतिसंख्याकं द्वाविंशं रुद्रदैवतम्।
त्रयोविंशं च कौवेरमाश्विनं तत्त्वसंख्यकम्॥
चतुर्विंशतिवर्णानां देवतानां च संग्रहः।

(१) अग्नि (२) प्रजापति (३) सौम्य (४) ईशान (५) सावित्री (६) आदित्य (७) बृहस्पति (८) मैत्रावरुण (९) भग (१०) ईश्वर (११) गणेश (१२) त्वष्ट्रा (१३) पूषा (१४) आग्नेय (१५) वायव्य (१६) वायुदेव (१७) मैत्रावरुण (१८) वैश्वदेव (१९) मातृका (२०) विष्णु (२१) वासुदेव (२२) रुद्र (२३) कुबेर (२४) अश्विनी कुमार।

गायत्री के २४ अक्षरों में उपरोक्त एक-एक देवता हैं। इसी प्रकार इन २४ अक्षरों में २४ ऋषियों का भी समावेश है। इनमें वे ऋषि तत्त्व भरे पड़े हैं, जो मनुष्य की आत्मा में विविध आध्यात्मिक स्तरों को विकसित करते हैं। देव-शक्तियाँ विभूतियों की प्रतीक हैं और ऋषि-शक्तियाँ श्रेष्ठताओं और सत्प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। मनुष्य को विभूतियाँ ही नहीं श्रेष्ठताएँ भी चाहिए। गायत्री महामंत्र के २४ अक्षर इन दोनों प्रकार की आवश्यकताओं को भी पूर्ण करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यों मोटे रूप से विश्वामित्र को गायत्री मंत्र का ऋषि माना जाता है, पर वास्तविकता यह है कि उसका तत्त्वदर्शन अनेक ऋषियों ने किया है। अनेकों ने अपने जीवन गायत्री माता के अंचल में बैठकर विकसित किए हैं और अनेक देवताओं का पयपान करके अपना ऋषित्व परिपुष्ट किया है। ऐसे महाभाग ऋषियों में २४ प्रमुख हैं। ऐसे स्वनामधन्य ऋषियों की आत्मा गायत्री के २४ अक्षरों के साथ अभी भी लिपटी हुई है और साधक की आत्मा को अपनी दिव्य आभा से आलोकित करती है। वे २४ ऋषि जो गायत्री के २४ अक्षरों के साथ अविच्छिन्न रूप से संबद्ध हैं, निम्न हैं—

अथातः श्रूयतां ब्रह्मन्वर्णऋष्यादिकांस्तथा।
छन्दांसि देवतास्तद्वत् क्रमातात्वानि चैव हि॥

"हे ब्रह्मन! अब गायत्री के २४ वर्णों के ऋषि, छंद, देवता आदि को क्रमशः कहते हैं।

वामदेवोऽत्रिर्वसिष्ठः शुक्रः कण्वः पराशरः।
विश्वामित्रो महातेजाः कपिलः शौनको महान्॥
याज्ञवल्क्यो भरद्वाजो जमदग्निस्तपोनिधिः।
गौतमो मुद्गलश्चैव वेदव्यासश्च लोमशः॥
अगस्त्यः कौशिको वत्सः पुलस्त्यो मांडुकस्तथा।
दुर्वासास्तपसां श्रेष्ठो नारदः कश्यपस्तथा॥

गायत्री के ऋषि ये हैं—वामदेव, अत्रि, वसिष्ठ, शुक्र, कण्व, पराशर, महातेजस्वी विश्वामित्र, कपिल, शौनक, याज्ञवल्क्य, भरद्वाज, जमदग्नि, गौतम, मुद्गल, वेदव्यास, लोमश, अगस्त्य, कौशिक, वत्स, पुलस्त्य, मांडुक, दुर्वासा, नारद और कश्यप।

देवता और ऋषियों की तरह गायत्री के चौबीस अक्षरों में चौबीस शक्तियाँ एवं चौबीस कलाएँ भी हैं। इनकी व्याख्या, विवेचना तथा साधना का वर्णन तो समयानुसार पीछे करेंगे, पर उनका परिचय तो पाठकों को जान ही लेना चाहिए—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र०	अक्षर	शक्ति	कला
०१	तत्	आह्लादिनी	तापिनी
०२	स	प्रभा	सफला
०३	वि	सत्या	विश्वा
०४	तुर	विश्वभद्रा	तुष्टा
०५	व	विलासिनी	वरदा
०६	रे	भ्रावति	रेवती
०७	णि	जया	सूक्ष्मा
०८	यं	शांता	ज्ञाना
०९	भर	काली	भर्गा
१०	गो	दुर्गा	गोमती
११	दे	सरस्वती	देविका
१२	व	विद्रुमा	वरा
१३	स्य	विशाला	सिद्धांता
१४	धी	ईशानी	ध्येया
१५	म	व्यापिनी	मर्यादा
१६	हि	विमला	स्फुटा
१७	धि	तमहारिणी	बुद्धि
१८	यो	सूक्ष्मा	योगमाया
१९	यो	विश्वयोनी	योगात्तरा
२०	नः	जयावह्य	धरित्री
२१	प्र	पद्मजा	प्रभवा
२२	चो	पद्मकोशा	कुला
२३	द	पद्मरूपा	निध्यमाना
२४	यात्	ब्राह्मी	निरंजना

गायत्री उपासक इन सभी ऋषियों का सहयोग और वरदान प्राप्त करता है और धन्य हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह रत्न भंडार किसे मिलेगा?

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मां शेवधिष्टेऽहमस्मि।

—वसिष्ठ स्मृति

''ब्रह्मविद्या-गायत्री ब्राह्मण के पास पहुँची और बोली मैं तेरा खजाना हूँ।''

ब्राह्मण को भौतिक जीवन में भले ही निर्धन या अभावग्रस्त रहना पड़ता हो, पर उसके पास आत्मिक संपन्नता इतनी प्रचुर मात्रा में होती है कि वह अपना ही नहीं दूसरे असंख्यों का भी कल्याण कर सकता है। अपने ही नहीं दूसरों के जीवन को भी आनंद एवं उल्लास से परिपूर्ण कर सकता है। स्वयं तो रोग-शोक रहित होता ही है दूसरों को भी निरामय, निःशंक, निर्भय एवं निर्मल बना सकता है। जिसके निज के पास विभूतियों का भांडागार भरा पड़ा हो, उसके लिए दूसरों की छिटपुट सहायता कर सकना कुछ विशेष कठिन नहीं होता।

तपकल्प तत्त्वदर्शी ऋषियों के संपर्क एवं आशीर्वाद से अनेकों का भला होते नित्य ही देखा जाता है। यह अजस्र अनुदान वितरण करने की क्षमता उस ब्राह्मण को कहाँ से आती है, उसका रहस्योद्घाटन उपरोक्त कंडिका में किया गया है। ब्रह्मविद्या-गायत्री, ब्राह्मण के पास पहुँची और उसे उद्बोधन करते हुए कहा—''मैं ही तेरा खजाना हूँ'' ऐसा खजाना जिसमें प्रत्येक स्तर की श्री, समृद्धि और सफलता प्रचुर परिमाण में भरी पड़ी है। ऐसे खजाने का पता जिसे लग जाए अथवा जो उसके उपयोग का अधिकारी बन जाए उसे भला कमी रहेगी भी किस बात की? उसकी शक्ति एवं सामर्थ्य की सीमा भी क्या रहेगी? ब्राह्मण द्वारा अपना और दूसरों का असीम उपकार इसी आधार पर होता है। परा और अपरा महाशक्तियों का बीज रहस्य जिसके हाथ लग गया हो, उसे इस संसार की कौन-सी विभूति उपलब्ध होने से बच सकती है?

महाशक्ति का यह महान भांडागार सबके लिए खुला नहीं है। खजाने की ताली विश्वस्त खजांची के हाथ में रहती है। हर कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसे अपने पास रखने का अधिकारी नहीं होता। उसी प्रकार गायत्री का वास्तविक एवं परिपूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए साधक को अपना ब्राह्मणत्व परिपक्व एवं परिपुष्ट करना होता है। उस महती अनुकंपा को करतलगत करने से पूर्व इस बात की परीक्षा देनी होती है कि वह ब्राह्मण है या नहीं? जो इस कसौटी पर खरा उतरता है उसे गायत्री महाशक्ति का साक्षात्कार होता है और वह सब कुछ मिल जाता है जो भगवती के पास है।

गायत्री उपासना का छिटपुट लाभ हर कोई उठा सकता है। सकाम उपासनाएँ बीजमंत्रों का प्रभाव, अनुष्ठान एवं पुरश्चरणों की शृंखला अपने ढंग के लाभ प्रदान करती रहती है। उनके द्वारा साधक के छिटपुट कष्ट दूर होने एवं अभीष्ट सफलताएँ प्राप्त होने का क्रम चलता रहता है। ऐसे लाभ और चमत्कार आएदिन देखने को मिलते रहते हैं, पर ये सब छोटे स्तर की वस्तुएँ हैं। अमुक कष्ट को दूर कर लेना या अमुक सफलता को प्राप्त कर लेना कोई बड़ी बात नहीं है। ऐसा लाभ तो भौतिक प्रयत्नों से भी प्राप्त किया जा सकता है। उपासना का लाभ तो अंतरात्मा को अनंत सामर्थ्य से भर देता और चंदन वृक्ष की तरह स्वयं ही सुगंधित होने के साथ-साथ समीपवर्ती झाड़-झंखाड़ों को भी अपने ही समान सुरभित कर देता है। ऐसा उच्चस्तरीय लाभ प्राप्त करने के लिए मनुष्य को ब्राह्मणत्व के अनुरूप गुण-कर्म-स्वभाव अपने में उत्पन्न करने पड़ते हैं। तभी वह खजाना मिलता है, जिसके लिए ब्रह्मविद्या ने ब्राह्मण का उद्‌बोधन करते हुए उसे उस महान भांडागार को हस्तगत कर लेने की प्रेरणा की है।

गायत्री महामंत्र में जिन देव-शक्तियों का समावेश है, वे सत्पात्र पर ही अवतरित होती हैं। स्वर्ग से उतरकर गंगा पृथ्वी पर आईं, तो उनको धारण करने के लिए शिवजी को अपनी जटाएँ फैलाकर अवतरण की पृष्ठभूमि तैयार करनी पड़ी थी। भगीरथ के तप से प्रसन्न होकर गंगा ने पृथ्वी पर उतरने का वरदान तो दिया था, पर साथ ही यह भी कह दिया था कि यदि मेरी धारा को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सँभालने वाली भूमिका न बनी, तो धारा पृथ्वी में छेद करती हुई पाताल को चली जाएगी। उसका लाभ भूलोकवासियों को न मिल सकेगा। इस आवश्यकता की पूर्ति जब शंकर भगवान ने कर दी तभी गंगा अवतरण संभव हो सका। गायत्री महाशक्ति की भी ठीक यही स्थिति है, उसे धारण करने के लिए समर्थ पृष्ठभूमि की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है और इस आवश्यकता की पूर्ति ब्राह्मणत्व के गुण-कर्म-स्वभाव से संपन्न साधक ही कर सकता है। ऐसा ब्राह्मण मंत्र की महाशक्ति को अपने में धारण कर सकता है और उससे व्यक्ति एवं समाज का महान उपकार साध सकता है। कहा भी है—

देवाधीनं जगत्सर्वं मंत्राधीनाश्च देवता।
ते मंत्रा ब्राह्मणाधीनास्मद् विप्रो हि देवता॥

—मत्स्य पुराण

"देवताओं के अधीन सब संसार है। देवता मंत्रों के अधीन हैं। वे मंत्र ब्राह्मण द्वारा प्रयुक्त होते हैं, इसलिए ब्राह्मण भी देवता है।"

महर्षि वसिष्ठ इसी प्रकार के सुर, पृथ्वी के देवता थे। उनके पास नंदिनी कामधेनु अर्थात गायत्री महाशक्ति थी। राजा विश्वामित्र के साथ जब वसिष्ठ का युद्ध हुआ और राजा की विशाल सेना परास्त हो गई, तो विश्वामित्र के मुख से यही निकला—"**धिग् बलं क्षत्रिय बलं, ब्रह्म तेजो बलम् बलम्।**" अर्थात भौतिक बल धिक्कारने योग्य तुच्छ एवं नगण्य है। वास्तविक बल तो ब्रह्मबल है, वही मंत्र बल है और वही सच्चा बल है। यह कहते हुए विश्वामित्र ने राजपाट परित्याग कर दिया और ब्रह्मबल प्राप्त करने के लिए तप करने लगे।

यहाँ किसी बिरादरी की चर्चा नहीं की जा रही है। हर बिरादरी में हर स्तर के लोग पाए जाते हैं। यहाँ गुण-कर्म-स्वभाव से ब्राह्मणत्व अपने भीतर विकसित कर सकें, उन्हीं साधकों की चर्चा की जा रही है और उन्हीं के लिए ब्राह्मण शब्द प्रयुक्त किया जा रहा है। वे ही मंत्रशक्ति के अधिकारी हो सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शास्त्रकार ने कहा है—

ये शान्तदाताः श्रुतपूर्णकर्णाः
जितेन्द्रियाः प्राणिव्यथान्निवृत्ताः।
प्रतिग्रहे संकुचिताग्रहस्तास्ते
ब्राह्मणास्तारयितुं समर्थाः॥

—ब्रह्मवैवर्त०

''जो ब्राह्मण शांत, दाता, वेदज्ञ, जितेंद्रिय, दयालु दान लेने वाले हैं, वे ही दूसरों का उद्धार कर सकते हैं।

ब्राह्मणः समदृक् शान्ते दीनानां समुपेक्षकः।
स्रवते ब्रह्म तस्यापि भिन्न भाण्डात् पयोयथा॥

—कात्यायन

''जो ब्राह्मण समदर्शी, शांतिवादी आदि का बहाना लेकर दीन-दुखियों की उपेक्षा करता है, सेवा से जी चुराता है, उसका ब्रह्मज्ञान वैसे ही नष्ट हो जाता है, जैसे फूटे बरतन में से पानी टपक जाता है।''

अतपास्त्वनधीयानः प्रतिग्रहरुचिर्द्विजः।
अम्भस्यश्मप्लवेनेव सह तेनैव मज्जति॥

—मनुस्मृति : ४.१९०

''ज्ञान और सेवा भाव से शून्य ब्राह्मण यदि दान लेता है, तो वह उस दान देने वाले के साथ ही इस प्रकार डूब जाता है (नरकगामी होता है) जैसे पत्थर की नाव में बैठा मनुष्य नौका समेत डूब जाता है।''

तपो विद्या च विप्रस्य निःश्रेयसकरं परम्।
तपसा किल्विषं हन्ति विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

—मनुस्मृति

''ब्राह्मण के लिए तप और विद्या दोनों अत्यंत श्रेयस्कर हैं। तप से पापों का नाश होता है और विद्या से अमर जीवन की प्राप्ति होती है।''

ब्राह्मण की मान्यता, भावना एवं आकांक्षा किस स्तर की होती है ? इसका दिग्दर्शन, परिचय अग्र श्लोकों में देखें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

याचे न कञ्चन न कञ्चन वंचयामि
सर्वे न कञ्चन नरस्तसमस्तदैन्यः।
श्लश्णंवसे मधुरमद्मि भजे वरस्त्रीं
देवीहृदियदि स्फुरति मे कुल कामधेनुः॥

—नीति दर्शन सार

मैं किसी से याचना नहीं करता, न किसी को ठगता हूँ और न किसी की नौकरी करता हूँ, तो भी मुझे कभी दीन होकर नहीं रहना पड़ता; क्योंकि सुंदर वस्त्र, मधुर भोजन, श्रेष्ठ स्त्री—ये सब चमत्कार मेरे हृदय में नित्य स्फुरणा करने वाली मेरे कुल की कामधेनु, ब्रह्मविद्या स्वरूपिणी देवी के ही हैं।

निर्धनोऽपि सदा तुष्टोऽप्यसहायो महाबलः।
नित्यतृप्तोऽप्यभुञ्जाना सर्वत्र समदर्शिनः॥

—नीति दर्शन सार

''निर्धन होने पर भी सदैव संतुष्ट रहता है, असहाय होने पर भी महाबलिष्ठ होता है, उपवासी होने पर भी नित्य तृप्त रहता है, वही सच्चा ब्राह्मण है।''

ब्राह्मणेतर वर्ण भी गायत्री साधना का लाभ उठा सकते हैं उसकी चर्चा शास्त्रों में जगह-जगह उपलब्ध होती है। यथा—

सोमादित्यान्वयाः सर्वे राघवाः कुरवस्तथा।
पठन्ति शुचयो नित्यं सावित्रीं परमां गतिम्॥

—महाभारत

हे युधिष्ठर! संपूर्ण चंद्रवंशी, रघुवंशी तथा कुरुवंशी नित्य ही पवित्र होकर परमगतिदायक गायत्री मंत्र का जप करते हैं।

तस्यर्षेः परमोदारं वचः श्रुत्वा नरोत्तमौ।
स्नात्वा कृतादिको वीरो जपेतुः परमं जपम्॥

—वाल्मीकि रामायण

परम उदार ऋषि के वचन सुनकर राम-लक्ष्मण दोनों भाई स्नान आचमन करके गायत्री का जप करने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रभावेणैव गायत्र्याः क्षत्रियः कौशको वशी।
राजर्षित्वं परित्यज्य ब्रह्मर्षिपरमीयिवान्॥
सामर्थ्यं प्राप चात्युच्चैरन्यद् भुवनसर्जने।
किं किं न दद्यात् गायत्री सम्यगेवमुपासिता॥

—स्कंद पुराण /का० ख० ९/५५-५६

क्षत्रिय विश्वामित्र ने राजर्षि पद से उन्नति करते हुए ब्रह्मर्षि पद गायत्री मंत्र की उपासना से ही प्राप्त कर लिया तथा दूसरी सृष्टि रच डालने की भी शक्ति प्राप्त की थी। भली प्रकार साधना की हुई गायत्री भला कौन सा ऐसा अभीष्ट लाभ है, जिसे प्राप्त नहीं करा सकती?

वंदे तां परमां देवीं गायत्रीं वरदां शुभाम्।
यत्कृपालेशतो यान्ति द्विजा वै परमां गतिम्॥

उस वरदात्री परम देवी गायत्री को नमस्कार है, जिसकी लेशमात्र कृपा से द्विज-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य परमगति को प्राप्त करते हैं।

उपर्युक्त अभिवचनों में ब्रह्मणेतर जातियों द्वारा गायत्री उपासना करने और उसके आधार पर परम सिद्धियाँ प्राप्त करने का वर्णन है। इससे स्पष्ट है कि जातिगत बंधन लगाने का शास्त्रों में कोई उल्लेख नहीं है। केवल इतना ही कहा गया है कि जो इस महाशक्ति का वास्तविक लाभ उठाना चाहें, वे अपने आंतरिक एवं व्यावहारिक जीवन में ब्राह्मणत्व की विशेषताएँ उत्पन्न करें। जो इस दिशा में प्रयत्नशील रहे हैं, उन्होंने इतना कुछ पाया है कि स्वयं धन्य हुए हैं और दूसरों को धन्य बनाया है। जिन्होंने जप-ध्यान तक ही अपने को सीमित रखा, वे लौकिक जीवन में छिटपुट समृद्धियाँ भी प्राप्त न कर सके। कारण स्पष्ट है। शारीरिक और मानसिक अनाचार बरतने से आत्मशक्ति का इतना क्षरण हो जाता है कि साधक मणिवाले सर्प की तरह निस्तेज ही रहता है। किसी मंत्र-तंत्र के सहारे भी अपना आंतरिक वर्चस्व बढ़ाने का अवसर नहीं मिलता। आज के अगणित पूजा-भजन में संलग्न व्यक्ति इसी प्रकार तेज रहित जीवन बिता रहे हैं। उनने उपासना को सरल जानकर उसे तो अपनाया पर जीवन शोधन की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिन प्रक्रिया से बचते, कतराते रहे ऐसे लोगों को आत्मबल और उसके आधार पर मिलने वाली महान उपलब्धियाँ भला मिलें भी तो कैसे और अपने आशीर्वाद से किसी का भला कर सकें तो कैसे?

देखा जाता है कि अभी भी कितने व्यक्ति गायत्री-उपासना करते हैं और उसके फलस्वरूप ज्ञान एवं विज्ञान की उपलब्धि चाहते हैं; किंतु कुछ कहने लायक सफलता नहीं मिलती। इसका कारण उनके उपासना क्रम का अधूरापन ही है। साधारण साधना का विधि-विधान शास्त्रों की मामूली जानकारी किन्हीं प्रामाणिक ग्रंथों के आधार पर की जा सकती है। उन्हें कर सकना भी कुछ विशेष कठिन नहीं है। लोग करते भी हैं, कर भी रहे हैं। पर साधारण कठिनाइयों या मामूली सी कामनाओं की पूर्ति के अतिरिक्त वस्तुतः कोई इतना प्रभाव उन्हें नहीं दीखता, जिससे यह अनुमान लगाया जा सके कि गायत्री महामंत्र के माध्यम से, वेदों में वर्णित आत्मविद्या के असंख्य चमत्कारी लाभों में से, ऋद्धियों-सिद्धियों में से कुछ की उपलब्धि वे कर सकेंगे।

इस असफलता से निराश होने की आवश्यकता नहीं, वरन यह देखना है कि यह अवरोध क्यों उत्पन्न होता है? इसका एकमात्र कारण साधक का शरीर और मन उस उच्च स्तर का न होना ही है, जिसमें कि आध्यात्मिक साधनाएँ फलित हुआ करती हैं। गन्ने की, गुलाब की या दूसरी कीमती फसलें पैदा करने के लिए वाटिका को जमीन की आवश्यकता पड़ती है। उसमें पानी का समुचित प्रबंध करना होता है। यदि ऐसा न हो सके और ऊसर बंजर में बिना जोते बीज बो दिए जाए, वहाँ खाद-पानी तथा सुरक्षा का प्रबंध न हो तो अच्छी फसल की आशा किस प्रकार की जा सकेगी? आध्यात्मिक साधनाएँ जिनमें गायत्री उपासना प्रमुख है, एक प्रकार की वैज्ञानिक कृषि है, उसकी उपयुक्त साधना आवश्यक है। इस संदर्भ में सबसे अधिक आवश्यकता साधक के उत्कृष्ट व्यक्तित्व की है। उसकी मनोभूमि बढ़िया किस्म की होनी चाहिए। यह बढ़ियापन जितना बढ़ा-चढ़ा होगा, उतनी ही साधना की सफलता सुनिश्चित रहेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बढ़िया बंदूक में रखकर चलाए जाने पर कारतूस जैसा ठीक काम करता है, वैसा घटिया, नकली बंदूक में रखकर चलाए जाने पर काम नहीं कर सकता है। कारतूस वही है, पर बंदूक के घटिया-बढ़िया होने पर वह अपना काम भी वैसा ही करता है। मंत्र एक प्रकार का कारतूस है। व्यक्तित्व को बंदूक कहना चाहिए । यदि साधक का चरित्र, स्वभाव, आचार, व्यवहार, दृष्टिकोण निकृष्ट स्तर का है, तो गायत्री जैसे महान शक्ति संपन्न मंत्र की उपासना का प्रतिफल भी संतोषजनक न होगा। यदि कोई चरित्रवान, इंद्रिय संयमी, तपस्वी, उदारमना एवं देव-स्वभाव का मनुष्य उसी मंत्र को जपेगा, उसी उपासना को करेगा, तो निकृष्ट स्तर के व्यक्तित्व की तुलना में इसका परिणाम सैकड़ों गुना अधिक होगा। मंत्र वही, विधान वही, फिर भी सफलता में इतना अंतर? इस विषय में किसी को शंकाशील नहीं होना चाहिए। गायत्री जादू नहीं, एक सर्वांगपूर्ण विधान है। घटिया रेडियो खड़-खड़ करते हुए जरा-सी आवाज में बोलते हैं। जबकि बढ़िया, कीमती रेडियो बहुत साफ और बुलंद आवाज में बोलते हैं। दिल्ली से एक ही तरह की आवाज बोली जाती है, आकाश में भी कंपन्न एकसे हैं, पर पास-पास रखे हुए दो रेडियो जिनकी सुई उसी स्टेशन पर है, यदि आवाज की दृष्टि से बहुत बड़ा अंतर प्रकट करते हैं, तो उसमें दोष किसी का नहीं उन सस्ते और कीमती यंत्रों का ही है। मीरा, सूर, तुलसी, कबीर आदि ने जो हरि-नाम लिया था, उसी को हम रोज लेते हैं, पर उनके उत्कृष्ट व्यक्तित्वों से मंत्र सफल हुए, भगवान ने दर्शन दिए, पर हमारे लिए वही हरि-नाम कुछ भी प्रतिफल उत्पन्न नहीं कर सकता, तो उसका दोष बाहर किसी को न देकर अपनी आत्मिक दुर्बलताओं को ही देना चाहिए।

गायत्री और उसकी पृष्ठभूमि

दशरथजी को जब संतान-कामना की पूर्ति के लिए 'पुत्रेष्टि यज्ञ' कराने की आवश्यकता हुई, तो उनका विधि-विधान भली प्रकार जानते हुए भी महर्षि वसिष्ठ ने उसे पूरा कर सकने में अपनी असमर्थता प्रकट की। इस पर दशरथ जी ने आश्चर्य के साथ इसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण पूछा। वसिष्ठ जी ने कहा—"पुत्रेष्टि यज्ञ का विधान तो मैं जानता हूँ, पर व्यक्तित्व की दृष्टि से पूर्ण ब्रह्मचारी न होने के कारण उस विधान को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने की सामर्थ्य से संपन्न नहीं। वर्तमान ऋषियों में यह कार्य शृंगी ऋषि ही ठीक तरह पूरा करा सकते हैं; क्योंकि वयस्क हो जाने पर भी वनवास में रहने के कारण उन्होंने रमणी को न तो देखा है और न उसकी कल्पना की है। ऐसे ब्रह्मचारी की आत्मा ही इतनी बलिष्ठ हो सकती है कि उसके द्वारा सफल पुत्रेष्टि यज्ञ कराया जा सके।" अंततः शृंगी ऋषि को ही बुलाया गया और उन्हीं के पौरोहित्य में दशरथ जी का वह पुत्रेष्टि यज्ञ सफल हुआ जिसके प्रभाव से राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जैसी आत्माओं को अवतरित होना पड़ा। शृंगी ऋषि जैसे तपस्वी का पौरोहित्य न मिला होता, तो विधि-विधान से पूर्ण ज्ञाता आचार्य द्वारा कराए जाने पर भी पुत्रेष्टि यज्ञ सफल न होता।

मंत्र वही है, विधि-विधान भी वही है, उनकी जानकारी वही है। उसकी जानकारी ग्रंथों से तथा दूसरे विद्वानों से प्राप्त की जा सकती है, इतने पर भी उनकी वैसी महिमा जैसी कि बताई गई है, अकसर दृष्टिगोचर नहीं होती। इसका कारण उस विद्या का मिथ्या होना या विधि-विधान में कोई फरक रह जाना नहीं, वरन यह होता है कि उसे करने वाले का व्यक्तित्व एवं चरित्र उस स्तर का उत्कृष्ट नहीं होता; ऐसे ही आत्मविद्या का विधि-विधान जान लेना ही पर्याप्त नहीं वरन यह भी आवश्यक है कि वह अपने चरित्र एवं मानसिक स्तर को पवित्र तथा उत्कृष्ट बनाने में संलग्न रहे।

गायत्री उपासना के छिटपुट लाभ साधारण रीति से जप, अनुष्ठान करने वालों को भी मिल सकते हैं, गमलों में छोटे से फूल-पौधे उगाए तो जा सकते हैं, पर यदि कोई विशाल वृक्ष लगाना हो, तो यह आवश्यक है कि उसके लिए ऐसी जमीन ढूँढ़ी जाए, जिसमें होकर जड़ें नीचे गहराई तक प्रवेश कर सकें। बरगद और पीपल के वृक्ष गमलों में उगा तो सकते हैं पर फलने-फूलने की स्थिति तक नहीं पहुँच सकते। गायत्री जैसा महामंत्र जिसकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामर्थ्य की कोई तुलना नहीं, पूरी तरह अपना प्रभाव तभी प्रकट कर सकता है, जब साधक की मनोभूमि काफी परिष्कृत एवं सुसंस्कृत बनाई गई हो। उपासना का विधि-विधान पूरी तरह जानना और उसका कर्मकांड उचित तरीकों से पूरा करना अभीष्ट सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है, पर उससे भी ज्यादा आवश्यक यह है कि साधक अपने भावना स्तर को अधिकाधिक ज्योतिर्मय बनाने के लिए हर संभव प्रयत्न करे।

उपासना, भजन-पूजन के विधि-विधान को—जप, तप, धारणा, ध्यान आदि को कहते हैं। साधना, अपने गुण-कर्म-स्वभाव को व्यवस्थित, सुसंस्कृत एवं परिष्कृत बनाने को कहते हैं। उपासना को बीज और साधना को भूमि कहते हैं। यदि भूमि अच्छी न होगी, तो बीज के फलित होने की आशा नहीं की जा सकती है। यदि किसी साधक ने अपने आहार-विहार, विचार, व्यवहार, क्रिया-कलाप, उद्देश्य, दृष्टिकोण को परिष्कृत बनाने के लिए श्रम नहीं किया है। केवल मंत्र विद्या के क्रिया-कलापों को ही पूरा करता रहा है, तो समझना चाहिए कि उसका श्रम ऊसर में गुलाब का बगीचा उगाने का प्रयास जैसा है। मंत्रों की शक्ति बेशक बहुत बड़ी है, पर उनका लाभ हर व्यक्ति नहीं उठा सकता। जिन्हें उपासना का चमत्कार देखना हो, उन्हें अपने आप को उसी तरह तपाना चाहिए जैसे अग्नि में सोने को तपाकर उसे विकार रहित किया जाता है। शुद्ध सोने का ही उचित मूल्य मिलता है।

कच्ची मिट्टी से बने घड़े, खिलौने एवं ईंटें कमजोर रहते हैं, पर जब उन्हें आग में पका लिया जाता है, तो मजबूत हो जाते हैं और देर तक ठहरते हैं। अभ्रक एक सस्ती वस्तु है, पर जब उसका सौ बार अग्नि संस्कार किया जाता है, तो बहुमूल्य अभ्रक रसायन बन जाता है। साधक का चरित्र और व्यक्तित्व जितना निर्मल होगा, उपासना उतनी ही जल्दी, उतनी ही अधिक प्रतिफलित होगी। दुष्ट, दुराचारी, स्वार्थी और संकीर्ण, गंदे और निकम्मे आदमी मंत्रशक्ति का चमत्कारी परिणाम प्राप्त कर सकने से वंचित ही रह जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाभारत में सावित्री द्वारा सत्यवान के वरण की कथा आती है सावित्री किसी को अपना साथी बनाना चाहती थी। किसी के साथ अपने को घुला देना चाहती थी। ऐसे साथी की खोज में देश-देशांतरों में घूमती रही। अंततः उसे उपयुक्त व्यक्ति मिल गया, वह था सत्यवान। लकड़हारे, निर्धन, असहाय सत्यवान को राजकन्या सावित्री ने इसलिए वरण किया कि वह आंतरिक संपदाओं का धनी था। उसके गुण-कर्म-स्वभाव का स्तर ऊँचा था। वरण कृत्य हो गया। सत्यवान का आयुष्य एक वर्ष में पूरा हो चला। यम उसका प्राण ले चले। पर सावित्री ने यम के हाथों से अपने सहचर को छुड़ा लिया। अपनी शक्ति द्वारा उसे अजर-अमर बना दिया।

यह आलंकारिक कथा-उपासना की सफलता का रहस्य भली प्रकार समझा देती है। सावित्री, गायत्री का ही दूसरा नाम है। वह सार्थकता प्रदान करने के लिए उपयुक्त व्यक्ति को खोजती है। ऐसा सहचर सत्यवान, सत्यनिष्ठ, सदाचारी, उत्कृष्ट, आंतरिक स्तर का व्यक्ति ही हो सकता है। जब दोनों का साथ हो जाता है, तो गायत्री अपना चमत्कार दिखाती है। उसे यम के पाश से छुड़ाकर अजर-अमर बना देती है। सावित्री के—गायत्री के पास जितना विभूति भंडार है, वह सुसंस्कृत साधक—सत्यवान को मिल जाता है। यदि किसी को इस महाशक्ति की सिद्धियों का साक्षात्कार करना हो, तो उसे उपरोक्त कथानक में समाए हुए रहस्यपूर्ण तत्त्वज्ञान को हृदयंगम करना चाहिए।

ब्राह्मणत्व का अभिवर्द्धन गायत्री उपासना की सफलता का मूलभूत आधार है। छिटपुट लाभ मामूली उपासना से सामान्य स्तर के साधक भी पा सकते हैं, पर यदि इस महामंत्र का सच्चा स्वरूप और वास्तविक चमत्कार देखना हो, तो अपने गुण-कर्म-स्वभाव में ब्राह्मणत्व की मात्रा निरंतर बढ़ाते चलने के लिए साधकों को सच्चे मन से कटिबद्ध होना चाहिए। गायत्री माता इसी आधार पर अपने अक्षय कोष का अधिकार किसी को प्रदान करती है।

गायत्री उपासना का लाभ और चमत्कार देखने के इच्छुकों को केवल साधना विधान के कर्मकांड की बारीकियों को ही नहीं ढूँढ़ते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहना चाहिए, वरन अपनी शारीरिक एवं मानसिक भूमिका का भी परिष्कार करने के लिए सचेष्ट रहना चाहिए। ठीक है, विधि-विधानों का भी अपना महत्त्व है। ठीक है—बीजमंत्र तथा दक्षिणमार्गी, वाममार्गी साधना विधान अपना-अपना विशिष्ट प्रतिफल उत्पन्न करते हैं। पर इसके लिए उनकी समुचित जानकारी इस महाविद्या के प्रयोगकर्त्ताओं को ठीक तरह अनुभव और अभ्यास में लानी चाहिए। इसके लिए अनुभवी मार्गदर्शक और ऋषि परंपरा की शास्त्रीय पद्धति का अवलंबन ग्रहण करना चाहिए। साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिए कि आध्यात्मिक उपासनाओं के पथ पर गतिशील होने के आकांक्षी साधक को अपने व्यक्तित्व की उत्कृष्टता बढ़ाना तथा स्थिर रखना नितांत आवश्यक है। आत्मिक प्रगति की यह एक अनिवार्य शर्त है।

बढ़िया किस्म का बाण भले ही हो, पर उसे ठीक निशाने तक पहुँचाने के लिए बढ़िया मजबूत धनुष भी तो चाहिए। सड़ी-घुनी लकड़ी के धनुष के लिए तीर को निशाने तक फेंक सकना तो कठिन ही है—इस खींचतान में अपनी भी दुर्गति करा लेगा। ओछे आदमी घृणित और निकृष्ट दृष्टिकोण अपनाकर जीवनयात्रा कर रहे हैं। ऐसे कुसंस्कारी व्यक्ति भले ही जप-तप का बाह्य आवरण पूरा करते रहें, वह कर्मकांड उनकी आंतरिक प्रगति में कुछ विशेष सहायता न कर सकेगा।

प्राचीनकाल में ऐसे अनेक साधक हुए हैं, जिनका साधन-विधान कोई बड़ी शास्त्रीय परंपरा पर आधारित न था, फिर भी उन्हें अपने उद्देश्य की पूर्ति में आशाजनक सफलता मिली। कबीर की शिक्षा स्वल्प थी, उन्हें मार्गदर्शक भी अनुभवी नहीं मिला। संत रामानंद उनके ऐसे ही गुरु थे, जैसे एकलव्य के द्रोणाचार्य। वे प्रत्यक्ष में कबीर के गुरु होने की बात से इनकार करते रहे। रैदास की वंश परंपरा ने उन्हें शास्त्रीय पद्धति का लाभ लेने से वंचित रखा। मीरा केवल भजन, कीर्तन, नृत्य एवं भावोन्माद तक अपना साधना-विधान सीमित रख सकी। शबरी किस प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की उपासना पद्धति अपनाए रही, कुछ पता नहीं चलता। वाल्मीकि तो सीधा राम-नाम भी न ले सके। उन्हें 'मरा मरा' का उलटा नाम जपकर ही आगे बढ़ना पड़ा। ऐसे उदाहरण साधना इतिहास के पन्ने पर भरे पड़े हैं और आज भी ऐसे अनेक साधक मिलते हैं, जिनकी शिक्षा एवं साधना पद्धति उपहासास्पद है, फिर भी उनने काफी ऊँचाई तक आत्मिक प्रगति कर ली। इसका मात्र कारण उनके व्यक्तित्व की उत्कृष्टता ही थी। मानवीय सद्भावनाओं का बाहुल्य ही उनकी यह विशेषता थी, जिसने उच्चस्तरीय सफलता का अधिकारी उन्हें बना दिया।

दूसरी ओर ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं, जिनमें उपासना का शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक प्रकरण भली प्रकार जानते हुए भी साधक कुछ आशाजनक लाभ प्राप्त न कर सके। रावण, कुंभकरण, मेघनाद, मारीच, भस्मासुर, वकासुर, हिरण्यकशिपु, मधु-कैटभ आदि अगणित व्यक्ति उच्च कुलों में उत्पन्न हुए थे। उनके गुरु भी शुक्राचार्य पारंगत थे। उन्होंने कठिन तपश्चर्याएँ भी कीं और वरदान भी पाए, फिर भी इन सुविधाओं का कोई विशेष लाभ उन्हें नहीं मिला। उनकी आत्मिक प्रगति नगण्य रही। जो साधना-तपश्चर्या उनने की वह उनकी आत्मा का, उनके परिवार का, सारे समाज का कुछ भी हितसाधन न कर सकी। अतएव हमें उसी निष्कर्ष पर पहुँचना होगा कि जिन्हें वस्तुतः आध्यात्मिकतता का लाभ लेना हो, इस मार्ग पर चिरस्थाई और आशाजनक प्रगति करनी हो, उन्हें सबसे पूर्व सबसे अधिक ध्यान इस बात पर देना चाहिए कि उनका व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, गुण-कर्म-स्वभाव, संस्थान-अंतःकरण चतुष्टय उत्कृष्ट स्तर का बने। यही ब्राह्मणत्व है, ब्रह्मवर्चस्व की सारी शक्ति, चेतना एवं क्षमता इसी आधार पर उपलब्ध होती और बढ़ती है।

❐

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org